शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'कोरजा' उपन्यास में चित्रित स्त्री संघर्ष

कु.सपना भारती (शोधार्थी)
हिंदी एवं भाषा विज्ञान विभाग
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय
जबलपुर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

हिंदी साहित्य की उपन्यास विधा में लेखकों ने भारतीय समाज में स्त्री के विविध प्रकार के संघर्ष को चित्रित किया है। बहु लतावादी भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति दोयम दर्जे की रही है यद्यपि स्त्री को प्रतिष्ठा दिलाने के अनेक प्रयास किये गए। समाज सुधारकों ने उन्हें जाग्रत करने का प्रयास किया। इसके बावजूद पुरुष प्रधान समाज में स्त्री को हमेशा हाशिये पर ही रखा। ख्यात उपन्यासकार मेहरुन्निसा परवेज ने अपने उपन्यासों में मुस्लिम समाज में महिलाओं की स्थिति को चित्रित किया है। उनका 'कोरजा' उपन्यास भी इसी पृष्ठभूमि पर आधारित है। प्रस्तुत शोध पत्र में 'कोरजा' उपन्यास में चित्रित स्त्री संघर्ष का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

भूमिका

मेहरुन्निसा परवेज जी द्वारा रचित 'कोरजा' उनका तीसरा उपन्यास है। यह सन् 1977 ईस्वी में नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, दिल्ली से प्रकाशित हुआ। 'कोरजा' उपन्यास नारी जीवन के यथार्थ पर केंद्रित है, जो नारी के जीवन संघर्ष को विभिन्न रूपों में प्रस्तुत करता है। मध्यवर्गीय मुस्लिम नारी की जीवन व्यथा को यह उपन्यास बहुत ही यथार्थपरक रूप से प्रस्तुत करता है। 'कोरजा' उपन्यास में मेहरून्निसा परवेज ने नसीमा को केंद्र में रखा है, जिसकी परवरिश उसकी नानी के घर होती है, जो प्रत्येक घटनाओं की प्रत्यक्ष गवाह है।

'कोरजा' उपन्यास का नाम मेहरुन्निसा परवेज ने बस्तर की क्षेत्रीय भाषा से प्रेरित होकर रखा है। "खेतों से धान की फसल काट ली गई थी और अब छोटे-छोटे बच्चे हाथों में टोकने लिए खाली हाथों में धान की गिरी हुई बाले ढूंढ रहे थे। बस्तर में इस क्रिया को 'कोरजा' कहते हैं हल्बी भाषा में।"[1]

इस उपन्यास को सन् 1980 में मध्यप्रदेश शासन ने अखिल भारतीय 'वीर सिंह जुदेव' पुरस्कार प्रदान किया। लखनऊ (उत्तर प्रदेश) हिंदी संस्था द्वारा भी इस उपन्यास को सम्मानित किया गया और सन् 1995 में 'सुभद्रा कुमारी चौहान' राजकीय पुरस्कार भी इसे दिया गया।

कोरजा में चित्रित स्त्री संघर्ष

बस्तर में समय व्यतीत कर मेहरून्निसा परवेज जी ने व्यक्तिगत अनुभव अर्जित किया, उसे ही 'कोरजा' उपन्यास के माध्यम से व्यक्त किया है। 'कोरजा' उपन्यास की शुरुआत रब्बो की शादी से होती है। शादी में नसीमा भी उपस्थित होती है। जहां रब्बो आपा अपनी बेटी सन्नो से परिचय करवाती है। उस समय नसीमा को ऐसा महसूस होता है कि शायद रब्बो आपा पुनः जवानी की दहलीज पर उसके सामने खड़ी हो गई है।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मेहरून्निसा परवेज ने 'कोरजा' उपन्यास में मुस्लिम समाज के शादी समारोह के रीति-रिवाजों एवं वातावरण का जीवंत चित्रण किया है।

रब्बो आपा, समीना से कहती है "सन्नो की पसंद है। दोनों एक-दूसरे को पसंद करते हैं। अब पहले-सा वक्त तो रहा नहीं नसीमा, जब प्यार को घर वालों से छुपा कर करना पड़ता था, जबान से निकलता तक नहीं था कि हम फलाँ से प्यार करते हैं। जहाँ मां-बाप ने रिश्ता तय कर दिया, बस वहीं चले आए... वक्त बदल गया नसीमा उसके साथ-साथ सब बदल गया है।"[2] मेहरुन्निसा परवेज जी ने यहां समाज में आए परिवर्तन को रेखांकित किया है। नारी वर्षों से शोषित होती आ रही है। प्रेम विवाह को मान्यता नहीं थी, परंतु आज समाज में नवीन पीढ़ी ने परिवर्तन को गति प्रदान की है। आज की पीढ़ी प्रेम विवाह की ओर अग्रसर है, जो परिवार के सहयोग से संपन्न हो रहे हैं।

भारतीय समाज व्यवस्था पुरुष प्रधान है। जहां पुरुषों का एक छत्र राज चलता है। इस व्यवस्था में नारी सदैव शोषित होती आई है, प्रताड़ित रही है। नारी के इसी जीवन का चित्रण मेहरून्निसा परवेज ने 'कोरजा' उपन्यास में किया है। इसी कारण 'कोरजा' उपन्यास नारी की यथार्थता पर आधारित है। इस कारण ही इसका आरंभ अरमान बी के समय से होता है। अरमान बी अपने शराबी पति रहमान खां से बहुत प्रताड़ित एवं उत्पीड़ित रहती हैं। रहमान खां अरमान बी का पति उसे समझाते हुए कहता है, "अरे खुद कुरान शरीफ में खुदा ने फरमाया है कि मैंने तुम्हारे लिए औरत पैदा की है, ऐश करने के लिए और खाने के लिए परिंदे। भई, एक जैसी एक ही कमीज 3 दिन पहनो तो बदन काटने दौड़ता है, वैसे ही एक औरत के साथ कुछ दिन रह लो तो साला मुंह का मजा खराब हो जाता है।"[3] मेहरुन्निसा परवेज ने यहां मुस्लिम वर्ग की महिलाओं के जीवन के कटु यथार्थ को बहुत ही गंभीरता से प्रस्तुत किया है।

अरमान बी के घर हमेशा कलह का ही माहौल बना रहता था। रहमान खां उसके साथ आए दिन झगड़े करता। वह उस की पत्नी अरमान बी को सुख से रहने तो नहीं देना चाहता था। वह परस्त्रियों के साथ विलासी जीवन जीने में ज्यादा दिलचस्पी रखता था। वह अपने बच्चों को कभी प्यार नहीं देता था। सदैव दुत्कारता था। अपने विलासी जीवन के कारण ही वह अपनी सगी बेटी पर भी कामुक दृष्टि रखता था। अरमान बी वक्त की मार खाई अनुभवी औरत थी। परखी आंखों ने ताड़ लिया और पति को बाज-सा पकड़ा। वह समझ गई थी कि अचानक लड़की की ओर बाप का प्रेम नहीं उमड़ा है। बल्कि यह मक्कार आदमी की वहशी आंखो का पानी था, जो घर में फुदकती नये परों की फड़फड़ाती चिड़िया को एक ही बार में दबोच लेना चाहते थे।"[4] अरमान बी अपने पति की नजरें और करतूत को पहचान जाती है। और रहमान खां के मना करने के बावजूद भी अपनी बेटी फातमा की शादी करीम मियां सेकर देती है। फातिमा की एक बेटी नसीमा और एक बेटा। बेटा गंभीर बीमारी से इलाज के दौरान पैसे के अभाव में मर जाता है। फातमा और उसके पति में पैसे को लेकर आए दिन कलह होती है। बात तलाक तक आ जाती है। पति घर छोड़कर चला जाता है। फातिमा की मानसिक स्थिति इस सदमे के कारण खराब हो जाती है और कुछ वर्षों बाद फातिमा भी पीलिया रोग से ग्रस्त होकर मृत्यु को प्राप्त हो जाती है। कुछ सालों बाद करीम मियां अपनी बेटी को

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

नानी अरमान बी के पास छोड़ जाता है और दूसरा विवाह कर लेता है।

पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था के कारण ही प्रत्येक स्त्री को इस प्रकार की सामाजिक समस्याओं से गुजरना पड़ता है। फिर वह स्त्री मुस्लिम समाज की ही क्यों ना हो आखिर है तो स्त्री। हीना बी, अरमान बी के पास आने से पहले नानी के पास रब्बो आपा, साजो खाला और उनके तीनों बेटे रह रहे होते हैं। रब्बो आपा और साजो खाला दोनों का बहुत भयावह अतीत था। उन्हें बहुत विषम परिस्थितियों में जीवन यापन करना पड़ता था। वेचरामा नामक छोटे कस्बे में अपनी सौतेली मां के साथ रहने के लिए मजबूर थी। रब्बो के पिता की मृत्यु के बाद उसकी सौतेली मां ने उस पर बहुत कहर बरपाये। सौतेली मां का दूर का रिश्तेदार छोटा भाई एक बार उसके घर आया। और वह छोटी उम्र की रब्बो से शारीरिक संबंध स्थापित कर लेता है, जिसके परिणाम स्वरूप रब्बो गर्भवती हो जाती है। सौतेली मां को पता चलता है, तो वह उसे बहुत मारती और प्रताड़ित करती है। उसे अंत में मृत बच्चा पैदा होता है। रब्बो को ऐसे गुनाह की सजा मिलती है, जो उसने किया ही नहीं। गलती एक बालिग पुरुष करता है और सजा नाबालिग रब्बो को मिलती है। रब्बो के साथ यही सब होता है। नानी ने बहुत मेहनत और लोगों के सहयोग से साजो की शादी बहुत ही सम्पन्नता से करती है। लेकिन इसका कोई अर्थ नहीं निकल पाता क्योंकि साजो का पति निहायती निकम्मा नागवारा निकलता है, जो विवाह की संपत्ति को भी नष्ट कर देता है। इस कारण कुछ माह बाद ही साजो पति के साथ नानी के घर आकर ही रहने लगते हैं। इसका यह परिणाम होता है कि नानी की आर्थिक समस्या और अधिक बढ़ जाती है।

'कोरजा' उपन्यास में कम्मो नामक एक महिला पात्र भी है, जो बचपन में बेसहारा हो जाती है। माता-पिता के न रहने के कारण उसका पालन-पोषण उसके चाचा-चाची करते हैं। जब कम्मो युवावस्था को प्राप्त करती है तो उसका संपर्क अमित नामक युवक से होता है, जो पेशे से पत्रकार है। वह जगदलपुर में अपने परिवार के साथ रहता है। जिसमें उसकी मां, एक बड़ी बहन और एक छोटा भाई है। अमित को शराब पीने की बुरी आदत है, परंतु वह जैसे ही कम्मो के संपर्क में आता है, शराब पीना छोड़ देता है। मोना अमित की बड़ी बहन है, उसका विवाह तय हो जाता है, लेकिन विवाह से पूर्व ही उसके होने वाले पति का देहांत हो जाता है।

रब्बो की शादी भी ऐसे व्यक्ति से की जाती है, जिसकी दो संतानें पहले से हैं। नानी के अथक प्रयास से रब्बो की शादी हो जाती है। यहां कम्मो अकेली रहती है। पत्रकार अमित का उसके घर आना-जाना लगा रहता है। अचानक एक दिन अमित, कम्मो को भीगी अवस्था में देख लेता है और वह कम्मो के प्रति कामातुर हो जाता है। अपनी अतृप्ति और कुंठा के वशीभूतअमित पुनः शराब का सेवन करने लगता है। शराब की अधिक मात्रा लेने के कारण अमित अचानक बीमार हो जाता है। यही बीमारी उसकी मृत्यु का कारण बन जाती है। उसके कुछ ही दिनों बाद अचानक ही कम्मो की लाश एक बंद घर में मिलती है, जिसे पुलिस वाले दरवाजा खोलकर निकालते हैं। अकस्मात ही एक दिन नसीमा को उसके पिता का पत्र प्राप्त होता है, जिसमें लिखा होता है कि वे उसे लेने आ रहे हैं। लेकिन नसीमा पिता के साथ जाना नहीं चाहती। लेकिन कुछ समय बाद वह अपने पिता के साथ चली

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

जाती है। उसे ज्ञात हो जाता है कि एहसान की भी शादी हो चुकी है।

मेहरुन्निसा परवेज कृत 'कोरजा' उपन्यास निम्न मध्यमवर्गीय मुस्लिम वर्ग पर केंद्रित उपन्यास है। 'कोरजा' के संदर्भ में डॉ. सरिता कुमार लिखती हैं, "मेहरुन्निसा परवेज के तीसरे उपन्यास 'कोरजा' (1977) में मुस्लिम जीवन और संस्कृति को आधार बनाया गया है, जिसमें इश्कबाजी का अपना अंदाज और बयान है। इस संस्कृति में सेक्स की इतनी छूट है कि यह नर और नारी के संबंधों को एक और उलझाती है और दूसरी ओर सुलझाती है। इसलिए इस उपन्यास के पात्र जीवन की विपन्नता का संकेत देते हैं, जो सेक्स के स्वरूप को बदलने में सहायक होता है। यह कृति मेहरून्निसा परिवेज की उपन्यास कला का विकसित रूप है।"[5] डॉ.नीहार गीते के कथनानुसार "इस उपन्यास में लेखिका ने नई संभावनाओं के साथ चीजों को उजागर किया है। पात्रों की जीवंत स्थितियों को प्रस्तुत किया है। कई जिंदगियों के सूखते हुए सपने, उनका उजाड़ बंजर जीवन, बड़ी सफलता से प्रस्तुत किया गया है।"**6**

निष्कर्ष

मेहरून्निसा परवेज का उपन्यास 'कोरजा' नारी जीवन की त्रासदी की दासता अगर कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। उन्होंने अपने लेखन से मुस्लिम समाज में स्त्रियों की दयनीय स्थिति का जीवंत चित्रण किया है। 'कोरजा' उपन्यास में स्त्री जीवन की पीड़ा, दुःख-दर्द को स्वर प्रदान किया है। उनके पात्र अपनी समस्याओं को अपने दायरे में हल करने का निरंतर प्रयास करते हैं, लेकिन अंततः असफलता ही हाथ लगती है। जिन समस्याओं का चित्रण उपन्यास में किया गया है, वह केवल एक वर्ग विशेष तक सीमित नहीं है, बल्कि उसका फलक काफी विस्तृत है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 मेहरुन्निसा परवेज, 'कोरजा', पृष्ठ 171
2 मेहरुन्निसा परवेज, 'कोरजा', पृष्ठ 14
3 मेहरुन्निसा परवेज, 'कोरजा', पृष्ठ 20
4 मेहरुन्निसा परवेज, 'कोरजा', पृष्ठ 18
5 डॉ.सरिता कुमार, महिला कथाकारों के कथा साहित्य में प्रेम का स्वरूप विकास, पृष्ठ 78
6 डॉ.निहार गीते, महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में यथार्थ के विभिन्न रूप, पृष्ठ 106